राम कथा में स्त्री
विशेष सन्दर्भ: नरेन्द्र कोहली

घनश्याम राम
पी-एच.डी. शोधार्थी
हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक

शोध सारांश:
रामकाव्य में राम का चरित्र सबसे प्रमुखता से उभरा है। राम यहाँ कभी मर्यादा पुरुषोत्तम, शील-गुण संपन्न, वीर और जागरण के अग्रदूत के रूप में उभरे हैं तो कहीं विष्णु-अवतार के रूप में परंतु राम की महानता के आगे अन्य पात्र गौण हो जाते हैं, मुख्यतः स्त्री पात्र। अतः अपनी कथा को समाज शास्त्रीय व्याख्या देने के लिए और समाज की नग्नता को समग्रता में उपस्थिति करने के लिए नरेन्द्र कोहली जी ने वाल्मीकि रामायण को आधार स्वरुप ग्रहण किया है। राम कथा में वाल्मीकि से लेकर कोहली तक अगर कुछ नहीं बदला, तो वह है समाज और समाज में स्त्रियों का स्थान। वाल्मीकि का समाज भी स्त्रियों के प्रति उदार नहीं था और न ही संवेदनशील। स्त्रियाँ सदैव भोग की वास्तु ही समझी गई हैं। उनका स्वतंत्र अस्तित्त्व कभी स्वीकारा ही नहीं गया है। उन पर दोषारोपण किए गए, अत्याचार किए गए। सामाजिक नियम और बंधन का हवाला देकर उनका अनुचित लाभ उठाया गया। कभी बलात्कृता हुई तो कभी निष्कासित। 'अहल्या' बलात्कृता होती है और पाषाण बन जाती है। अज्ञात कुल-गोत्र में जन्मी सीता एक राजा के द्वारा पाली जाती है परन्तु उसके विवाह के लिए जनक द्वारा ऐसी शर्त रखना, सीता हरण, सबरी का घर घने वन में होना, बाली द्वारा रूमा का अपहरण और बलात्कार तथा मंदोदरी की स्थिति इत्यादि की समाज शास्त्रीय व्याख्या कोहली जी की कथा में देखने को मिलती है। यहाँ स्त्री के दोनों रूपों का चित्रण है- अबला और सबला परन्तु अबला भी समाज के नियमों के अनुसार अत्याचार स्वीकार नहीं करतीं बल्कि मौन विद्रोह व्यक्त करती हैं और यह जता देती है कि खोट इस समाज में ही है। दूसरी ओर स्त्री सशक्तिकरण और स्वतंत्रता के सूत्र भी सीता के द्वारा दिखाते हैं। कोहली जी ने रामकथा की स्त्रियों को आज की सामाजिक समस्याओं के रूप में देखा और अज के सन्दर्भ में उनका सटीक चित्रण किया।

बीज शब्द:
समाज शास्त्र, अस्तित्त्व, सनातन, पितृसत्तात्मक, वीर्य शुल्का, आदिवासी, महाकाव्यात्मक उपन्यास

राम कथा कोई नई कथा नहीं है और न ही यह पहली बार लिखी गई है। जितनी पुरानी सनातन संस्कृति है, राम भी उतने ही या उससे भी पुराने हैं। बहुत अधिक समय तक मौखिक अवस्था में रहने के कारण इसके रूप में स्थिरता नहीं रही। राम का उल्लेख वेदों में भी मिलता है परन्तु वह प्रचलित राम कथा के राम से भिन्न हैं। राम कथा का आधार विद्वानों द्वारा वाल्मीकि कृत रामायण को ही माना गया है। आज के समय सनातनियों के चित्त गंगा में स्नात राम गोस्वामी तुलसीदास के राम हैं, जो दशरथ नंदन, मर्यादा पुरुषोत्तम, अवतारी राम हैं जिन्होंने संसार के कल्याण के लिए अवतार लिया है जबकि परवर्ती रामायणों के आधारी वाल्मीकि के राम का चित्रण शील, धौर्य और असाधारण गुणों से संपन्न दिव्य महापुरुष के रूप में हुआ है। इसलिए तुलसी का 'रामायण' वाल्मीकि के 'रामायण' से इस प्रकार भिन्न है कि एक के राम महापुरुष हैं तो दूसरे के विष्णु के अवतार।

राम कथा का आधार लेकर आधुनिक कलेवर में लपेटकर उसे प्रस्तुत करने का कार्य नरेन्द्र कोहली ने किया है। इन्होंने अपने 'महाकाव्यात्मक उपन्यास' में पौराणिक एवं ऐतिहासिक चरित्रों की गुत्थियों को सुलझाते हुए उनके माध्यम से आधुनिक समाज की समस्याओं एवं उनके समाधान को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना इनकी अन्यतम विशेषता है। कोहली जी लिखते हैं कि उनकी कथा का आधार तुलसीकृत रामायण नहीं वरन वाल्मीकि रामायण है।[1] कोहली जी अपनी कथा में राम को शील, गुण संपन्न योद्धा के रूप में दर्शाते हैं।

समय की मांग को परखते और चमत्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या करते हुए इन्होंने जितना महत्त्व राम, हनुमान, लक्ष्मण और रावण को दिया है, उतना ही महत्त्व सीता, अहल्या, सबरी और मंदोदरी को भी दिया है। स्त्री अस्मिता, सुरक्षा और सशक्तिकरण इनकी कथा में सुलभ है। नरेन्द्र कोहली ने अपनी राम कथा पर आधारित उपन्यास का आधार तुलसी कृत रामचरितमानस को नहीं बनाया क्योंकि उनका मानना है कि तुलसी के समय और समाज में वह क्षमता नहीं थी जो हर बात को बेबाकीपन से कह दे, इसलिए उन्होंने वाल्मीकि रामायण का आधार लिया जिससे समाज की नग्नता को उसके नंगेपन के साथ उसकी समग्रता एवं कुरूपताओं के साथ चित्रित किया जा सके। अनादिकाल से स्त्रियों को दोयम दर्जे का समझा गया है। इस समाज में उसकी न तो अपनी पहचान बन पाई और न ही किसी ने उसके स्वतंत्र अस्तित्त्व को स्वीकारा। स्त्री सदा दूसरों के नाम से जानी जाती रहीं- कभी पिता, कभी पति और कभी पुत्र के नाम से- यथा- रतिनाथ की चाची, सुन्नर पाण्डेय की पतोहू[2] इत्यादि। स्त्री की पराधीनता का सबसे बड़ा कारण है आर्थिक रूप से पिछड़ा होना। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियाँ बहुसंख्या में अर्थ के लिए पिता या पति पर निर्भर हैं। जब तक स्त्रियाँ आर्थिक रूप से स्वाबलंबी नहीं बन जातीं, तब तक समाज में उन्हें बराबरी का अधिकार नहीं मिल सकता। स्त्री पराधीनता से स्वाधीनता की यात्रा के सूत्र कोहली जी की कथा में मिलते हैं। कोहली जी की कथा में स्त्री जिस रूप में आई है, वह अन्यत्र कहीं नहीं है। इनके समस्त पात्र सदियों से अपनी लड़ाई लड़ते आ रहे हैं फिर भी आज तक उनकी स्थिति जस की तस बनी हुई है। स्त्रियों के पास जो चिंताएं पहले थीं, वे आज भी हैं। आज भी स्त्री पारिवारिक और सामाजिक स्समस्याओं से जूझ रही हैं। कोहली जी के यहाँ स्त्री पात्र दो रूपों में प्रकट हुई हैं- एक वह जो समाज का शोषण दर्शाती है तो दूसरी स्त्री स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करती है। सीता जनक की पुत्री नहीं थी। वह वीर्य शुल्का थी।[3] इसलिए सीता को कोई अच्छा वर नहीं मिल रहा था जिसका कुल श्रेष्ठ हो अथवा को प्रेमवश सीता से विवाह करता। यह बात जनक भलीभांति जानते और समझते भी थे। कोहली के जनक को इस बात की चिंता अधिक थी कि सीता का विवाह किसी ऐसे पुरुष से न हो, जो उसे मात्र भोग्य बना कर रखे अथवा जिसके पास बीस-तीस रानियों की सेना हो। इसी समस्या के निराकरण के लिए जनक ने सीता स्वयंवर में शिवधनुष नामक यन्त्र के परिचालन की शर्त रखी जिससे भले ही सीता अविवाहित रह जाए परन्तु उसे किसी कुपात्र का वरण न करना पड़े। यही कारण है कि राम को देखने के पश्चात् सबसे अधिक आहत जनक ही हुए थे कि अपनी शर्त के कारण राम जैसे वर का वरण सीता न कर सकेगी।

रामकथा में कोहली जी ने समाज की एक गंभीर समस्या को 'अहल्या' के द्वारा उकेरा है। बलात्कार आज के समाज की भी एक गंभीर समस्या है जिसका समाधान वर्षों से नहीं हो पाया है परन्तु इससे भी जटिल समस्या है स्त्रियों के प्रति समाज का दृष्टिकोण। आज का यह प्रश्न है कि स्त्री की सुरक्षा का उत्तरदायित्व किसका है? इसका उत्तरदायित्व न तो स्त्री के कंधे पर है और न पुरुष के कंधे पर वरन यह समाज के कंधे पर है। इंद्र द्वारा बलात्कृता ऋषि गौतम की पत्नी अहल्या शिला हो गई परन्तु गौतम उसकी सहायता न कर पाने के लिए बाध्य हैं। जिस स्त्री के साथ बलात्कार हो और उसके बलात्कार का दोष उसी पर मढ़ दिया जाए, सत्य जानते हुए भी समाज और यहाँ तक कि उसका पति भी उसका परित्याग कर दे, ऐसे में स्त्री शिला नहीं होगी तो और क्या होगी ! अहल्या शिला नहीं 'शिलावत' हो गई थी क्योंकि वह समाज से दूर एकांत में उस पाप का पश्चाताप कर रही थी जिसका दोषी यह समाज है। "जिसे समाज ने त्याग दिया था, कोई उसके घर जाता नहीं था, उसके हाथ का पानी नहीं पीता था, जो जंगल में रहने को बाध्य है, उसके घर राम स्वयं जाकर उसके चरण छूते हैं और उसका सत्कार करते हैं। ये एक तरह से पूरे समाज को चुनौती है कि जिसको तुम दोषी मानते हो, उसका मैं चरण छूता हूँ।"[4] राम ने अहल्या को पाषाणयोनि से मुक्ति दिलाकर उसे समाज में पुनः वही सम्मान दिलाया जो एक स्त्री को मिलना चाहिए। राम अहल्या के दरवाजे पर राजा राम बनकर नहीं आए, वरन अगुआ बनकर आए थे जिन्होंने दलितों, पिछड़ों और शोषितों को सशक्त किया ताकि वे अपने अस्तित्व की लड़ाई स्वयं लड़ सके।

स्त्री होना एक चुनौती है और दलित होना तो अभिशाप। सबरी स्त्रियों के इसी स्वरुप में उभरी है। वह दलित स्त्री है निर्जन वन में रहती है, तथा कथित उच्च वर्णों के सभ्य नगरों से दूर। उसे समाज ने बाहर कर रखा है। ऐसी सबरी उस राम का राह देख रही है जो जागरण के अगुआ हैं। राम उसके दरवाजे पर जाते हैं और सबरी के जूठे बेर खाते हैं और यह सिद्ध करते हैं कि जाति व्यवस्था केवल प्रतारणा के लिए बनी है। जब तक सभ्य समाज स्वयं को जाति-धर्म से ऊपर मानवता के धरातल पर स्थापित नहीं कर लेता तब तक इस समाज की मुक्ति संभव नहीं। राम जागरण के अग्रदूत रहे

हैं। उन्होंने वन में जाकर उन समस्त लोगों को सशक्त करने का प्रयास किया, जिन्हें एक उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता थी। उन्होंने वानरों (वन में रहने वाले नर/आदिवासी)[5] को शिक्षित किया, उन्हें आत्मगौरव प्रदान किया और उनके मध्य कुटीर उद्योग का विकास किया जिससे वे राक्षस रूपी इस धनाढ्य वर्ग से अपनी रक्षा कर सके। आदिवासी स्त्रियों को भी स्वनिर्भर बनाने के प्रयत्न किये गए जिससे वे पारिवारिक व् सामाजिक विषमताओं से ऊपर उठ सके और अपने आस्तित्व को पहचान और उसके लिए लड़ सके।

सीता का चित्रण करते हुए कोहली जी लिखते हैं कि वन में राम की सहचारिणी सीता अति सुन्दर है परन्तु कोमलांगी नहीं। वह राम के साथ शास्त्राभ्यास सीखती है और अन्य लोगों को भी सिखाती है। राम कहते हैं कि एक स्त्री को अपनी सुरक्षा के लिए स्वयं प्रयासरत रहना होगा और प्रत्येक अवसर पर अपने प्रक्रम द्वारा पुरुषों की सहायता करनी होगी। सीता समाज की उन दबी-कुचली स्त्रियों को प्रशिक्षित करती है, जिनका अपहरण किया गया, जो बलात्कृता हैं, जो अपने पतियों से पीड़ित हैं। सीता कुटीर उद्योग द्वारा उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है क्योंकि सीता यह जानती है कि स्त्रियों का शोषण तब तक होगा, जब तक वे आत्मनिर्भर नहीं हो जातीं। इस प्रकार कोहली जी सामाजिक ढांचें के मूल को स्पर्श करते हैं। कोहली जी की सीता न केवल राम की सहचारिणी हैं बल्कि उनकी सहायिका भी है। युद्ध बेला में अपने ज्ञान और कौशल से सीता शल्यचिकित्सा के द्वारा सबका उपचार करती है और जरुरत पड़ने पर सबके साथ मिलकर शत्रुओं से लड़ती भी है।

समय और समाज में सदैव एक ऐसा वर्ग होता है जिसे स्त्री मात्र भोग्या के और कुछ सूझती ही नहीं जिसके प्रतिनिधि बाली और रावण हैं। जहाँ एक तरफ बाली ने अपने भाई सुग्रीव को राज्य से निष्कासित कर उसकी पत्नी रूमा को कैद कर उसे बलात्कृत करता है तो वहीं दूसरी तरफ रावण से सीता का अपहरण इसलिए किया क्योंकि वह अपार सुंदरी है और शूपर्णखा से सीता की रूप चर्चा सुन कर वह असक्त हो उसे अपने पास रखना चाहता था। राम कथा की ये दोनों घटनाएँ एक सी हैं और परिणाम भी एक से। राम ने प्रत्येक बार यह सिद्ध किया है कि स्त्री अपमान का मात्र एक ही दंड है। अपने तर्कों द्वारा वाल्मीकि, तुलसी और कोहली- तीनों ने ही स्त्री सम्मान को सर्वोपरि रखा। यह समय और समाज के लिए आज भी प्रासंगिक है कि ऐसे कृत्यों के लिए केवल मृत्युदंड ही एकमात्र उपाय है।

रावण द्वारा सीता-हरण के समय राम-राम पुकारने के साथ-साथ रावण से युद्ध कर बच निकलने की चेष्टा भी स्त्री सशक्तिकरण की ओर ध्यान आकर्षित करता है कि स्त्री को युद्धकला में भी पारंगत होना आवश्यक है जिससे वह स्वयं की रक्षा के साथ-साथ अपनों की भी रक्षा कर सके। लंका में मंदोदरी भी रावण की कामुकता से क्षुब्ध है और चिंतित भी कि रावण द्वारा सीता को ब्याह लेने पर उसकी दशा कैसी दयनीय होगी। स्त्री चाहे किसी प्रान्त की हो, सब की दशा एक सी ही है।

राम कथा में स्त्री की जिस छवि को वाल्मीकि ने उकेरा था, तुलसी ने उसे ममता, स्नेह और भीरुता के संग में रंग दिया। वाल्मीकि ने स्त्रियों की समस्या के साथ उनकी सामाजिक स्थिति, उनकी महत्ता, उनका सशक्तिकरण किया परन्तु तुलसी के राम के आगे सब छोटे पर पड़ गए। वाल्मीकि के समाज शास्त्रीय राम को पुनः लोकमानस में रमाने का कार्य नरेन्द्र कोहली ने किया, जिन्होंने स्त्री-पुरुष समता को महत्त्व दिया। सीता को राम के बराबर ला खड़ा किया। इनके यहाँ यदि राम शक्तिमान हैं तो सीता उनके कंधे से कन्धा मिला कर लड़ने वाली सहायिका और चिकित्सिका भी है। कोहली की सीता किसी भी रूप में राम से कम नहीं है जिससे 'सीता-राम' नाम चरितार्थ हुआ है।

सन्दर्भ :

1. https://www.aajtak.in/author/sushantjha#:~:text=by%%20E%0A%4B%8E%0A%81%5E%0A4%B%6E%0A%4BE%E%0A%82%4E%0A%4A%4%20E%0A9%4D%E%0A%4BE%7%20C%%2014%20E%0A9%4C%E%0A%4A%8E%0A%4B%5E0%A%4B%0E%0A80%5,%E%0A%85%4E%0A%4AD%E%0A8%5D%E%0A%4AF%E%0A%81%5E%0A%4A%6E%0A%4AF%%20E%0A%4AE%E0%A%87%5E%0A%20%82%4E%0A%87%4E%0A%4A%8E%0A%95%4E%0A%20%87%5E%0A4%B%2E%0A8%5B%E%0A%95%4E%0A%4B...6
2. नागार्जुन, रतिनाथ की चाची, सुन्नर पाण्डेय की पतोहू,
3. कोहली, नरेन्द्र, राम-कथा- हिंदी पॉकेट बुक्स, एक पेंगुइन रैंडम हाउस कंपनी (1997 में प्रकाशित), पृष्ठ- 76
4. https://www.youtube.com/watch?v=eOYVEPrEv5A
5. https://www.youtube.com/watch?v=eOYVEPrEv5A